।। सत्तगुरू सत्ता को अंग ।।

मारवाडी + हिन्दी

(१–१ साखी)

महत्वपूर्ण सुचना–रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधाकिसनजी महाराज और जे.टी.चांड्क इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे,समजसे,अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नही करना है । कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है ।

✻ बाणीजी हमसे जैसे चाहिए वैसी पुरी चेक नही हुअी,उसे बहुत समय लगता है। हम पुरा चेक करके फिरसे रीलोड करेंगे। इसे सालभर लगेगा। आपके समझनेके कामपुरता होवे इसलिए हमने बाणीजी पढनेके लिए लोड कर दी ।

|| अथ सत्तगुरू सत्ता को अंग लिखंते ||

|| चौपाई ||

सतगुर सता न बर्णी जाई || सो मण रास बानगी माई ||
सत्तगुर सत्ता सिष मे आवे || अगम देस हंसा चल जावे ||१||

सतगुरु की सत्ता यह माया के शब्दोद्वारा जैसे के वैसे पूर्णत: वर्णन नही की जाती । पूर्णत: न वर्णन करते आने का कारण माया नश्वर है और यह सत्ता अमर है । फिर भी जगत को सतगुरु सत्ता समजे इसलिये जगत मे के मायावी दाखले देकर सतगुरु सत्ता समजाने की कोशिश की है । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है यह सतगुरु सत्ता शिष्य में जब जागृत होती तब शिष्य याने हंस काल का ३ लोक १४ भवन का भवसागर पार करके महासुखो के अगम देश मे जाता ।।।१।।

चुगे चिकोर चंद मुख जोवे || सितळ अगन किसी बिध होवे ||
ससी को इम्रत बसे सरीरा || साचा गरू चंद्रमण हीरा ||२||

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि शशी याने चंद्र के शरीर मे कुद्रती ही अमृत बसा रहता । इस अमृत मे यह सत्ता रहती की इससे चांद को सुरज का अती भारी तेज भी चंदन के समान शितल सुखदायक लगता । ऐसे चांद से चकोर पक्षी को प्रिती रहती । इस प्रिती के कारण वह चांद के मुख को निहारते रहता । इस निहारने के प्रकृतीसे चांद के तन मे का अमृत चकोर के नयनद्वार से चकोरपक्षी के तन मे उतरता । यह अमृत चकोर पक्षी मे प्रगट हो जाने के कारण चांद के समान उसे भी अग्नी के निखारे शितल लगते और वह पक्षी निखारे खाने में आनंद लेता ।

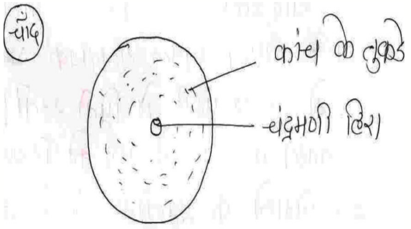

चंद्रमणी हिरा पूनम के चांद के प्रकाश से काच के तुकडे को भी अपने सत्ता के बल से अपने इतनाही तेजस्वी हिरा बनाता वैसेही सच्चे सतगुरु रहते । ये जैसे काल से मुक्त अमोलक है वैसेही शिष्य को काल से मुक्त अमोलक बनाते ।।।२।।

आप अमोलक और बणावे || दिप राग दिपक जग जावे ||
यूं सिष कोई क्रणी का हीणा || आप समान करे प्रबिणा ||३||

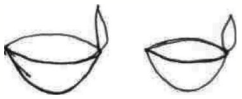

जैसे दिपक राग से न चेता हुवा दिया अपने आप चेत जाता वैसेही सच्चे सतगुरु से मोहमाया के भ्रम मे अंधा हुवा हंस चेत जाता याने वैराग्य विज्ञान ज्ञानी बन जाता । शिष्य कैसे भी कर्णी का हिन रहा तो भी वह शिष्य सतगुरु मे के सतस्वरुप विज्ञान के समान सतस्वरुप विज्ञानी बन जाता ।।।३।।

धिन धिन ज्यांरी सफळ कमाई || ज्यां संगत सतगुर की पाई ||
उड उड भुजंग चंदण बण जावे || यूं सिष तनकी तपत बुझावे ||

अंग ज्वाळा ब्यापे नही कोई ।। युं संगत सतगुर की होई ।।४।।

जिसे सतगुरु की संगत मिली उसकी काल से मुक्त होने की कमाई सफल हुई । वे धन्य है । वे धन्य है और उनकी कमाई भी धन्य है । भुजंग याने पंख आया हुवा जहरीला नाग । इसके घटमे उसके विषकारण सहे नही जाती ऐसी भारी तपन प्रगट हुई रहती । सहे नही जाती ऐसे तपन को मिटाने के खोज में वह उड्ते रहता । जैसेही उसे चंदन का पेड मिलता वह उससे लपेटता । लपेटते ही उसकी भारी तपन मिट जाती और वह विष के तपन से मुक्त होता । इसीप्रकार त्रायमान त्रायमान करने लगानेवाली आधी,व्याधी,उपाधी इन तिन्हों तापो की ज्वाला सतगुरु की संगत प्राप्त होते ही शिष्य की नष्ट हो जाती ।।।४।।

जडी सजीवण जीव जिवाया ।। क्या करणी मुडदो कर आया ।।
अमर करे अमीरस पावे ।। युं सत्तगुर की सता कवावे ।।५।।

जडी संजीवण मुरदे को जिवित करती ।

घटना–बहते नदीमें एक ओरसे संजीवन बुटी बहते आती और दुजे ओरसे मुरदा बहते आता । नदी के लहरो के छलांगो से संजीवन बुटी मुरदे के मुख में जा पड्ती जिससे मुरदा जिवित हो जाता । मुरदे ने कोई ऐसा मरने के बाद पुन:जिवित होना ऐसी कोई करनी नही की थी,फिर भी वह जिवित हुवा । अगर वह जिवित नही होता तो संजीवनी बुटी का मुरदे को जिवित करने का ब्रिद जाता ।

इसीप्रकार सतगुरु की सत्ता रहती । शिष्य करणीका कैसे भी निच रहा और सतगुरु के शरण में बिना सोचे समजे ना समज में आया तो भी वह शिष्य सतगुरु के सत्ता से काल के परे के महासुख के अगम देश पहुँचता ही पहुँचता ।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते जैसे किसी को अमृत पिलाया तो अमृत पिनेवाला जीव कई जन्मोतक अमर हो जाता ।(संतोने महाप्रलयतक बताया है याने रोगोसे वह महाप्रलय तक नही मरता परंतु अन्य Accident आदि दुजे कारणो से जरुर मर सकता)इसीप्रकार सतगुरु की सत्ता है । यह सत्ता शिष्य को अमृतरुपी शब्द पिलाकर अमरलोक पहुँचा कर सदा के लिये अमर करती ।।।५।।

पारस का सुण प्राक्रम भाई ।। लोहा पलट कंचन होय जाई ।।
ब्होरूं काट न लागे कोई ।। ओ प्राक्रम सतगुर मे होई ।।६।।

जैसे पारस यह पत्थर है । उस में यह पराक्रम है कि उसके पराक्रमसे लोहा सोना बन जाता । लोहे का सोना बनने पे उस सोने को याने पूर्व लोहे को सोना बनने के पहले काट लगता था और उसका विनाश होता था वह काट अब नही लगता ।

इसीप्रकार सतगुरु में पराक्रम है । शिष्य सतगुरु को मिलने के पश्चात शिष्य को बारबार जनमने–मरने का काट नही लगता । एक बार शरीर छोडा की वह अमरलोक ही जाता

फिरसे जन्मना,बुढा होना,मरना इस चक्कर में नही आता ।।।६।।

कल ब्रछ पूरे मन की आसा ।। युं सतगुर हे सुख की रासा ।।
चिंत्रावण चिंत्या फळ पावे ।। युं सतगुर निज नांव बतावे ।।७।।

जैसे कल्पवृक्ष मनके कल्पनानुसार मायाके सुखोकी चाहना पुरी करता इसीप्रकार सतगुरु जीव के निजमन के सुखो की चाहना पुरी करता । सतगुरु कल्पवृक्ष से बढकर सुख का भंडार है । चिंतामनी,जीव जिन जिन सुखो की चिंतन करता वह पुरी करता ।

जैसे–एक मूरख को चिंतामनी मिला । वह मूरख तो चिंतामनीके गुण को जानता नही था परंतु उसके हाथ मे चिंतामनी था और हाथ में चिंतामनी होने के कारण जैसे चिंतन करता वैसे हो जाता । उसे रास्तेसे चलते चलते भूक लगी तब उसने मन में चिंतन किया कि कुछ खानेको मिला तो अच्छा होगा ऐसा चिंतन करते ही वहाँ मिठाईकी थाली आई । वह मिठाई खाके उसने चिंतन किया कि खाने को तो मिल गया कितु पानी चाहिये ऐसे चिंतन करते ही स्वच्छ, निर्मल,थंडा पिने जैसा पानी उत्पन्न हुवा । इस मूरख को पानी पिने के बाद छाँव में बैठने का मन में आकर चिंतन किया कि यहाँ छाँव में बैठने के लिये मकान होता तो छाँव में बैठा होता । यहाँ पे मकान चाहिये ऐसा चिंतन करते ही हवेली महाल तयार हो गया । उस मकान में बैठकर सोने की इच्छा की तो पलंग,नोकर,चाकर,दास,दासी होते तो सभी का उपभोग लिया होता । तो ये होना चाहिये ऐसे कहते ही पलंग,दास,दासी,नोकर,चाकर सभी हो गये ।

इसीप्रकार सतगुरु शिष्य को निजनामरुपी चिंतामनी बताकर शिष्य का निजमन जो जो अनंत सुखो की चाहना करता वह पुरी करता ।।।७।।

जुरा काळ जम को डर भागे ।। जे निज नाव सिष मे जागे ।।८।।

ऐसा चिंतामनी रुपी निजनाव शिष्य मे प्रगट हो जानेसे जीव के बारबार जनम होकर बुढापे के दु:ख भोगना एवम् काल याने जम के जालिम कष्ट पलपल सहना ये सभी भारी दु:ख नष्ट हो जाते और सदा पलपल में अमरापूर में महासुख मिलते ।।।८।।

सतगुर सत्ता कही नही जावे ।। नग पंखि हीरा निपजावे ।।
ओ इचरज मानो मत कोई ।। कीट पलट भंवरा किम होई ।।९।।

सतगुरु सत्ता का पराक्रम कहे नही जाता । जिसप्रकार नगपंखी समुद्र में हिरे निपजता इसीप्रकार सतगुरु की सत्ता शिष्य के घट में हिरे समान अनंत सुख निपजाती ।

नगपक्षी की हिरे बनाने की विधी–

भंवरा अपने पराक्रम से कीट याने अली का देह पलटाकर उसे भंवरा बना देता । यह एक देह से दुजा देह बनाना जगत के नरनारी को आश्चर्य लगता परंतु गुरु महाराज कहते है ये आँखो देखे होता इसमे आश्चर्य क्या है? इस भंवरे के सत्ता में ये गुण कुद्रतीही है । इसीप्रकार सतगुरु की सत्ता मे है । सतगुरु की सत्ता से ५ तत्व का मरनेवाला देह अमर

अखंडीत ध्वनी तत्व का बन जाता । आज दिनतक काल जिस ५ तत्व के देह को चबा चबाकर खाता था वही देह पलटकर जिस देह का तेज काल दुरसे भी सह नही सकता ऐसा तेजस्वी बन जाता ।।।९।।

अमर बिवाण सीस चल आवे ।। पाँचू ग्यान गेब सूं पावे ।।
युं सता सदगुर की भाई ।। जागे सबद सिष के माई ।।१०।।

अमर विमानके छायाके निचे कोई मनुष्य आ जाता उसका यह गुण होता कि छाया के निचे आनेवाले हंस को अचानक न जानते ५ ज्ञान(मतज्ञान ,श्रुतज्ञान ,अवधीज्ञान ,मनपर्चेज्ञान, कैवल्यज्ञान)प्रगट हो जाते वैसेही सतगुरु की सत्ता है ।
जो शिष्य सतगुरु की सत्ता में आता है उस शिष्य के घट मे पांचो ज्ञान के साथ सतशब्द प्रगट हो जाता और वह शिष्य सतगुरु के समान वैराग्य विज्ञानी ज्ञानी बनता ।।।१०।।

छाया हमाव हुवे रंक राजा ।। फिरे द्राई क्हे म्हाराजा ।।
सतगुर सत्ता सिष यूं लेवे ।। साध साधकर सब जुग सेवे ।।११।।

जैसे हुमायु पंछी के छाया के निचे कितना भी दरिद्री मनुष्य आया तो भी वह मनुष्य उसी शरीर से एकदम महाराजा हो जाता । और उसका सारे देश में हुकूम आदेश चलने लग जाता और सारे देश परदेश के लोग उसे महाराजा कहने लगते ।
इसीप्रकार सतगुरुमें सत्ता रहती । इस सत्ता का शरणा जो शिष्य लेता उसे परमात्मा का साधू जानकर जगतके मनुष्य तथा ब्रम्हा,विष्णू ,महेश,शक्ती से लेकर होनकाल पारब्रम्ह और इच्छा माया पुजते और उसकी सेवा करते । जिसे कलतक एखाद मनुष्य भी जानता नही था उसे सतगुरु का शरणा मिलते ही ३लोक के मालिक ब्रम्हा,विष्णू ,महेश और इन ब्रम्हा,विष्णू , महेश मालिको के भी मालिक होनकाल पारब्रम्ह और इच्छा पुजने लगते । ।।११।।

सत्त गुर सत्ता जीव यूं जागे ।। चमक पथर लोहा उड लागे ।।
आ सुण सत्ता गुरा के माई ।। जड पश्वा चेतन होय जाई ।।१२।।

जैसे चुंबक को लोहेका किस उड उड्कर लगता ऐसे ही सतगुरु के सत्ता से जीव

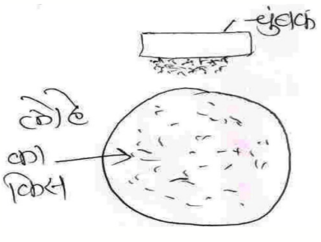

कालयुक्त मायावी सुखो के परे के सतस्वरुप के महासुखो के लिये जागृत होते । सतगुरु सत्तामें यह गुण है कि शब्द,स्पर्श,रुप,रस, गंध ये पांचो भोगमें पशु बुध्दी के समान अतीलिन हुये जड जीव भी सतस्वरुप विज्ञान वैरागी संतके समान चेतन हो जाते ।।।१२।।

सत्त गुर सत्ता सेज सिष झेले ।। अर्ध ऊर्ध बिच रामत खेले ।।
सास उसास रटे नित सांई ।। निर्मळ नेण खुले घट माँई ।।१३।।

सतगुरु के शरण में आकर जो शिष्य अर्ध उर्धमें याने सांस उसांस में राम नाम खेल को

नित्य खेलायेगा याने नित्य रटन करेगा उसके घटमे सतगुरु के सत्ता के कृपासे मलरहीत अगम देश के निर्मल आँखे खुलेगी ।।।१३।।

ऊगा सूर भया उजीयाळा ।। भ्रम क्रम मेटया अंधीयारा ।।
ब्होरू तिमर न ब्यापे कोई ।। झिग मिग जोत उदे घट होई ।।१४।।

जगत मे जैसे सुरज उगने पे सारे सृष्टीका अंधियारा मिट जाता ऐसेही सतगुरु सत्ता के कृपा से शिष्य के घट मे विज्ञान ज्ञान का प्रकाश होता । इस विज्ञान ज्ञान के प्रकाश से हंस के सभी भ्रम(भ्रम कौनसे–वेद,व्याकरण,शास्त्र,पुराण तथा त्रिगुणी माया में पूर्ण सुख खोजने का स्वभाव आदि)तथा आजदिनतक किये हुये सभी कर्मो से आया हुवा अंधापन मिट जाता । ऐसे विज्ञान ज्ञान की झिगमिग झिगमिग ज्योत शिष्य के घट मे उदीत होने के बाद भ्रम तथा कर्म का अंधियारा शिष्य के घट में पुन:कभी भी नही प्रगटता ।।।१४।।

ज्यूं मुख दीसे दर्पण मांई ।। अरस परस सेवग अर सांई ।।
कोटक भाण हुवा उजीयारा ।। दिल हीमे साहेब दीदारा ।।१५।।

जैसे कांच में देखनेवाले को अपना मुख अरसपरस दिखाई देता वैसे शिष्य को घट में साई अरसपरस दिखाई देता ।

जैसे जगत मे सुरज उगने पे प्रकाश सभी ओर होता वैसेही सतगुरु के विज्ञान सत्ता के कृपा से मेरे घट मे करोडो सुरज के समान विज्ञान ज्ञान का उजियारा हुवा । मेरे निजदिल में (● निजदिल) साहेब के नित्य दर्शन हो रहे ।।।१५।।

इम्रत बुंद झ डे कण मोती ।। दीपक ग्यान झिलामिल जोती ।।
मनवां चँवर करे मन माँई ।। ज्यां देखुं ज्याँ सतगुर सांई ।।१६।।

जैसे बारीश के दिनो में पानी के बुँद झड्ते तथा कभी मोती के समान ओले गिरते ऐसे शिष्य के घट में अमृत के ओलो की और बुँदो की झड लगती । जैसे दिपावली के दिन मे दिल को मोहित करनेवाली दिपक की झिलामिल सभी ओर दिखती ऐसेही विज्ञान ज्ञानरुपी दिपक की झिलामिल मेरे पूरे घट मे लग गई । यह सभी इचरज की चिजे देखकर मेरा निजमन सतगुरु के सत्ता का निजमन में ही आश्चर्य करने लगा । जैसे सती स्त्री को पुरी दुनिया में सिर्फ उसका ही पती एकमात्र पुरुष दिखता और अन्य पुरुष बालक दिखते ऐसा मुझे घट में तथा घट के बाहर सिर्फ सतगुरु साई दिखता बाकी सभी देवी–देवता तथा मनुष्य काल तथा काल ने मारे हुये मुरदे दिखते ।।।१६।।

सत गुरजी की मे बल जाई ।। अे सो भेद दियो मुज आई ।।
तन देवळ बिच आत्म देवा ।। निर्गुण भक्त भजन अे भेवा ।।१७।।

ऐसे सतगुरुजी के सत्ता के चरणो में मेरा प्राण न्योछावर है ।

जैसे जगत में देवता और उनके मंदिर रहते ऐसेही सतगुरुने अपने सत्ता से मेरा ही घट मंदिर बना दिया और उस मंदिरमे मुझे आत्मा का देवता परमात्मा देखने का भी भेद दिया

तथा उस निरगुण साई की भजन भक्ती करने का भी भेद दिया ।

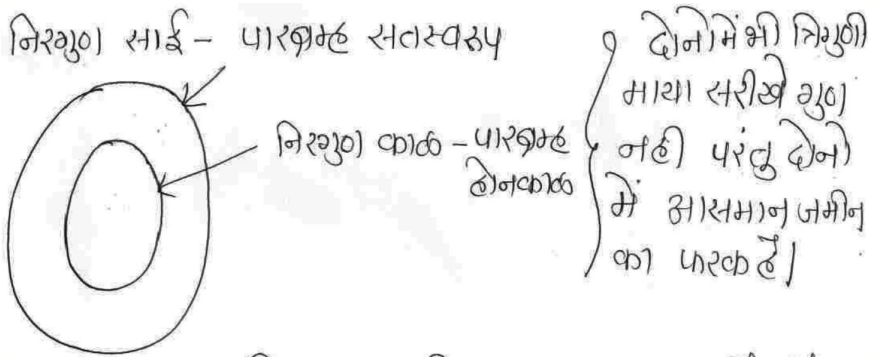
निरगुण साई – पारब्रम्ह सतस्वरुप
निरगुण काळ – पारब्रम्ह होनकाळ
दोनो में भी त्रिगुणी माया सरीखे गुण नही परंतु दोनो में आसमान जमीन का फरक है।

निरगुण साई सुख का सागर है और निरगुण काळ दु:ख का भंडार है । ।।१७।।

पेम फूल मनवा ले आवे ।। चित्त का चंदण ले च्रचावे ।।
सेवा बंदन आर्ती कीजे ।। तन मन वार अमीरस पीवे ।।१८।।

जैसे देवता के लिये भक्त फुल और फुलो के हार लाते ऐसा मेरा निजमन सतस्वरुप साई के लिये प्रेम के फुल लाता और जैसे देवतावो को भक्त चंदन चरचाते वैसे मेरा निजचित सतस्वरुप साई को प्रिती के चंदन चरचाता । इसप्रकार सतगुरु के सत्ता से घट मे प्रगट हुये सतस्वरुप ने:अंछर साई की सेवा और बंदगी करो । ये शरीर और मन सतगुरु के चरणो में न्योछावर करो और विज्ञान ज्ञान का अमृत पिवो ।।।१८।।

धूप ध्यान लागो दिन राती ।। दिपक ग्यान प्रीत की बाती ।।
सुखमण कळस अमी भर लाई ।। झिग मिग झिग मिग मिंदर मांई ।।१९।।

जैसे जगत में साधू ध्यान लगाते वक्त धूप रात–दिन जलाता वैसे सतस्वरुप का ध्यान लगाते वक्त प्रेम का धूप रात–दिन जलावो । जैसे मंदिर में दिपक में कपास की बत्ती रखकर बत्ती को चेताते वैसे तन मंदिर में विज्ञान ज्ञान के दिपक में ज्ञान की प्रित की बत्ती चेतावो । जैसे मंदिर में महिला भक्त पानी के कलस भर के लाती वैसे तन मंदिर में सुखमना अमृत के कलस भर लाती । जैसे मंदिर में दिपको के कारण सुहावनी झिगमिग झिगमिग होती वैसे मेरे घट मे विज्ञान ज्ञान के दिपको की लुभावनी झिगमिग झिगमिग लगी ।।।१९।।

मुरळी बीण बजे सुरनाई ।। संख की घोर गिगन घर छाई ।।
अनहद झालर का झणकारा ।। रूम रूम बोले रंरकारा ।।२०।।

जैसे मंदिर मे भक्त मुरली बजाते,बीण बजाते,सुरनाई बजाते वैसे मेरे घट में ने:अंछर के सत्ता से मुख से बिना बजाये मुरली,बीण और सुरनाई बज रही । मंदिर में भक्त संख बजाते और उस संख की घोर आवाज से मंदिर छा जाता वैसे मेरे पुरे घट में गिगनतक ने:अंछर के सत्ता से मुखसे बिना बजाते हुये संख घोर आवाज गिगन घर तक छा गया । जैसे भक्त मंदिर में झालर बजाता और उसके झनकार मंदिर में सभी ओर सुनाई देते वैसे मेरे घटमे सतगुरु सत्ता के कृपासे हाथ से झालर न बजाते झालर के समान पुरे घट में गिगन घर तक झनकारे सुनाई दे रहे है । जैसे मंदिर मे नरनारी राम राम राम राम के

सरीखी धुन बोलते वैसे मेरे शरीर में पुरे ३५००००००(३कोटी ५० लाख)रोम में अखंडीत ररंकार की ध्वनी लग गई ।।।२०।।

जन सुखराम सता आ जागी ।। ब्रम्ह समाध ब्रम्हंड मे लागी ।।
दसवे द्वार करे हंस केळा ।। अनंत कोट संतन का मेळा ।।२१।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि सतगुरु की सत्ता जागृत होने पे हंस ब्रम्हांड में पहुँचता और सदा के लिये ब्रम्हांड में दसवेद्वार में रहता और वहाँ हंस की सतस्वरुप ब्रम्ह के साथ समाधी लगती ।

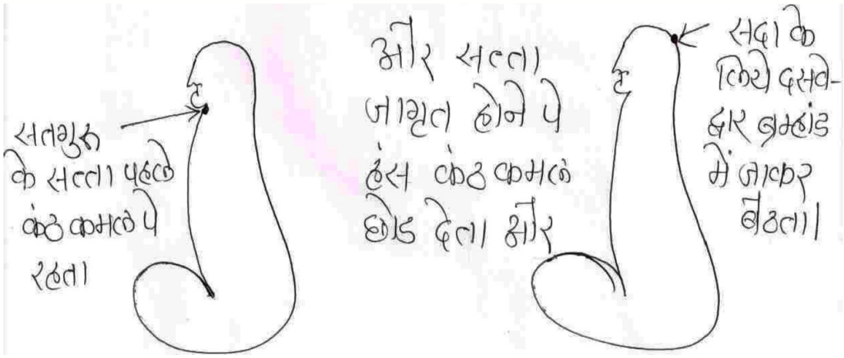
सतगुरु के सत्ता पहले कंठ कमल पे रहता।
और सत्ता जाग्रत होने पे हंस कंठ कमल छोड देता और
सदा के लिये दसवे-द्वार ब्रम्हांड में जाकर बैठता।

वहाँ दसवेद्वार में अनंतकोटी संतो का मेला है । दसवेद्वार पहुँचने पे हंस का अनंत कोटी संतो के साथ मेल मिलाप होता और वहाँ पे हंस संतो के साथ अनेक प्रकार की नित्य नई नई खेल क्रिडाये करता ।।।२१।।

अे सो समीयो सदा हमारे ।। आँठो पोहर संज्या क्या संवारे ।।
जन सुखराम अमर घर पाया ।। जामण म्रण मोहो नही माया ।।२२।।

मेरा उन संतो के साथ नाना भाँती की खेल क्रिडा खेलनेमें आठोपोहर,सुबह शाम बितता ऐसा आनंद मगन का समय मेरा हमेशा रहता । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि ऐसा काल के दु:खो से मुक्त और महाआनंद देनेवाला अमर घर मैने पाया । मैने ऐसा अमरघर (अमरलोक)पाया की अब मेरा काल के महादु:खो में जनमने का,मरने का भय सदा के लिये खतम् हो गया । इसीप्रकार काल के देश में ढकलनेवाले माता,पिता,पत्नी,पुत्र,धन,राज,पदवी आदी मायावी वस्तूवो में की मोह माया खतम् हो गयी ।।।२२।।

दोहा ।।

जन सुखिया सतगुर सत्ता ।। मोपे कही न जाय ।।
ज्यूं मुज बरती आय के ।। सो बिध कही सुणाय ।।२३।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि सतगुरु की सत्ता मैने चाँद और चकोरपक्षी, दिपक राग,चंद्रमणी हिरा और कांच,भुजंग और चंदन,संजीवनी बुटी और मुरदा,लोहा और पारस,कल्पवृक्ष,चिंतामनी,नगपक्षी,अमृत,हुमायु पक्षी और दरिद्री,चमक पत्थर और लोहे का किस आदि मायामें के उदाहरण देके जगतको समजाया परंतु सतगुरु सत्ता इतनी अगाध है कि वह मुझे कोई भी दाखला देकर जैसेके वैसे समजाते नही आयी

और नही आयेगी । सतगुरु सत्ता की जो विधी मुझमे बरती वह मैने माया के शब्दो में समजाते आती मतलब ज्ञान से वर्णन करते आती वह सारे दाखले देकर मुझमे प्रगट हुये विधी को बताया ।।।२३।।

|| इति सत्त गुरू सत्ता को अंग संपूरण ||